प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरण प्रबन्ध

समस्त हिमालय राज्यों में सबसे बड़ा नेपाल वास्तव में वाद्यमती घाटी का नाम है जो उस समूचे राजनीतिक क्षेत्र, जिस पर गोरखा सरकार का शासन है, का नामकरण है। ऐसी धारणा है कि नेपाल का यह वर्तमान नाम त्रेता एवं द्वापर कालीन न्यूमिन साम्राज्य के संस्थापक के नाम से उद्धरित है। कहा जाता है कि तत्कालीन महान संत नेम ने इस घाटी को अपने आर्शीवाद से मंत्रित किया, जिन्होने अपनी पवित्र साधना एवं तपस्या वाद्यमती एवं केशवती (केशवती का नाम अब विष्णुमती हो गया है) के संगम पर की। हिन्दू पुराकाला के सभी अभिलेख इस बात पर एकमत हैं कि वर्तमान नेपाल की घाटी पहले एक विस्तृत झील थी जो समय के साथ - साथ, धीरे - धीरे वाद्यमती के दोनों तटों के मध्य सीमित हो गयी।[1] नेपाल हिमालय के अंचल में स्थित है। इसे गोरखों का देश भी कहा जाता है। नेपाल पर्वतीय देश है। यह भारत तथा चीन के बीच बफर स्टेट है।[2]

स्थिति एवं विस्तार

नेपाल मध्य हिमालय के दक्षिणी ढाल पर स्थित एक स्वतंत्र गणराज्य है। यह 26^0 20′ से 30^0 10′ उत्तर तथा 80^0 15′ से 88^0 10′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। नेपाल भारत का पड़ोसी स्वतन्त्र एवं सार्वभौम देश है। इसके उत्तर में तिब्बत (चीन), दक्षिण,पश्चिम तथा पूर्व में भारत है।नेपाल की सीमा भारत के सिक्किम, पश्चिम-बंगाल, बिहार, उत्तर- प्रदेश तथा उत्तरांचल राज्यों से लगी हुई है। इसकी लम्बाई 830 किलोमीटर तथा चौड़ाई 160 किलोमीटर (कही-कही 200 किमी0) है। इसका क्षेत्रफल 141,577 वर्ग किलोमीटर है।[3]

संसाधन का अर्थ

संसाधन वह स्रोत है जिसके द्वारा मानव समाज (राष्ट्र) की आवश्यकताओं की पूर्ति अंशतः या पूर्णतः होती है। इस प्रकार मानव समाज(राष्ट्र) तथा संसाधनों का अन्योन्याश्रित

सम्बन्ध होता है। कोई भी संस्थान तब तक सांसाधन नहीं कहा जा सकता है जब तक कि उसमें राष्ट्र की आवश्यकता पूर्ति अथवा कठिनाई निवारण की आंशिक या पूर्ण क्षमता विद्यमान नहीं होती। अस्तु कोई वस्तु पदार्थ या तत्व उसी समय संसाधन माना जाता है जब उसमें मनुष्य अथवा राष्ट्र की आवश्यकता पूर्ति, कार्यविधि अथवा लाभ प्रदान करने की क्षमता के आधार पर ही संसाधन का स्वरूप निर्धारित होता है। मनुष्य की शारीरिक व बौद्धिक क्षमता, अभिरूचि, ज्ञान संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनैतिक स्थायित्व, आदि स्वयं में संसाधन हैं, क्योंकि सभी तत्व उसकी आवश्यकता पूर्ति व उन्नति में सहयोग देते हैं। संसाधन सम्पति और सुरक्षा दोनों का आधार है और शक्ति एवं धन की नींव है। यह युद्ध एवं शान्ति दोनों में राष्ट्र के भाग्य का निर्णायक है।

"संसाधन से अर्थ किसी उद्देश्य की प्राप्ति करना अर्थात् राष्ट्र की तथा सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करना है।" इस दृष्टि से जल, वायु, सूर्य का प्रकाश एवं ताप, मिट्टी, वन, भूमि, कोयला, मशीनरी, आदि सभी को संसाधन की संज्ञा दी जा सकती है, क्योंकि उनसे राष्ट्र की किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति होती है।

अतएव, संसाधन की दो मुख्य विशेषताएं मानी गयी हैः प्रथम - उसकी राष्ट्र के लिए उपयोगिता हैं, दूसरे, इसमें बौद्धिक, सांस्कृतिक और भौतिक क्षमता होती है जिससे इसका महत्व कार्य के लिए होता है।[4]

नेपाल विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है, यद्यपि यहाँ सभी धर्मों को समानता प्रदान की गयी है। हिमालय की गोद में बसा यह सुरम्य देश सर्वदा स्वतंत्र रहा हैं और अपने वीर और पराक्रमी निवासियों के लिए विश्व-विश्रुत है। पहले यह बहुत एकाकीदेश था, लेकिन इधर आर्थक सामाजिक और राजनैतिक विकास और आधुनिकीकरण के लिए यहाँ योजनाबद्ध चेष्टायें की जा रही हैं। कुछ दिनों तक यहाँ नेपाल राजघराने के संरक्षण में प्रजातान्त्रिक शासन था किन्तु कुछ उथल-पुथल के बाद फिर प्रजातंत्र व्यवस्था थी।पुनः नेपाल लोकतंत्र एवं राजतंत्र के मध्य उलझा हुआ है

भारत के साथ नेपाल के अच्छे सम्बन्ध रहे हैं और भारत ने नेपाल में सभी देशों से अधिक विकाश-सहायता प्रदान की है। नेपाल को, चीन तथा भारत के मध्य बहुत ही संतुलित व्यवहार रखना पड़ता है।

पर्यटन

नेपाल में पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जो नेपाल के आय का तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त करने मुख्य स्त्रोत है यहाँ की प्राकृतिक संरचना तथा विश्व का सर्वोच्च शिखर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों को आकर्शित करते हैं। नेपाल में वर्तमान समय में लगभग दो लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। उनसे नेपाल को लगभग पचास मिलियन नेपाली रु0 की आय प्रतिवर्ष हो जाती है। नेपाल सरकार इस उद्योग पर पर्याप्त ध्यान दे रही है।

उद्योग धन्धे

नेपाल में बड़े उद्योग कम हैं। कुल राष्ट्रीय उत्पादन में घरेलू एवं उद्योगों से कुल 9 प्रतिशत आय प्राप्त होती है। कोई खनिज प्रधान उद्योग नहीं है। नेपाल में लोहा, तांबा, निकिल, कोबाल्ट, सोना सिल्वर, संगमरमर, स्लेट, अभ्रक, चूना-पत्थर, टॉक, लिग्नाइट कोयला आदि के छिटपुट और छोटे जमाव हैं और उसमें उल्लेखनीय औद्योगिक उत्पादन नहीं होता। फूल चौकी एवं नारायण गढ़ में प्रत्येक से 1 करोड़ तथा थोसाई खानी (रामें छाप जिला) में 84 लाख टन लोहा खनिज का अनुमान है। जल - विद्युत की प्रचुर सुविधायें हैं और उसका विकास भी हो रहा है। पनौती, त्रिशूली, सेती, थारो, कोला, गंडकी, कोसी, कर्नाली आदि योजनायें उल्लेखनीय हैं। कुछ कस्बों एवं नगरों में (बालजू, हेतौदा, पाटन) औद्योगिक संस्थान स्थापित हुये हैं। कुटीर उद्योग - धंन्धे, कृषि, वन, पशु और खनिजों से प्राप्त कच्चे मालों पर आधारित हैं। विराटनगर, बीरगंज और भैरहवा में चीनी, जनकपुर, बीरगंज और हेतौदा में सिगरेट और विराटनगर के पास जोगबनी में जूट के कारखाने हैं। दियासलाई, कागज, फ़र्नीचर, चमड़ा उद्योग भी प्रमुख हैं।

उद्योग - धंधों को बढ़ावा देने के लिए यहाँ कई सुविधाएँ प्रदान की गयी तथा 1961 में अनेक नियम बनाये गये। भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा यहाँ सहायता प्रदान की गयी! इससे काठमाण्डू घाटी तराई प्रदेश में मुख्य रूप से भारत - नेपाल सीमा पर तथा प्रमुख राजमार्गों पर चीनी के कारखाने विराटनगर, वीरगंज, नेपालगंज तथा भैरहवा आदि में है। उद्योग - धन्धों को बढ़ावा देने के लिए पाटन, बालाजू तथा काठमाण्डू के समीप औद्योगिक बस्तियाँ विकसित की गई।

नेपाल में अभी तक आधुनिक आर्थिक अवयवों का बहुत कम विकास हो पाया है। लगभग 75 प्रतिशत उत्पादन का स्रोत कृषि और वन हैं और कुटीर उद्योगों को लेकर 85 प्रतिशत से अधिक हो जाता है। वृहत उद्योगों का स्रोत भी कृषि पदार्थ ही है। तद्नुरूप यातायात भी धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। 92 प्रतिशत लोग कृषि पर आश्रित हैं।

इधर भारत ने 1972 की व्यापार एवं ट्रांजिट संधि के अनुसार नेपाल को अन्य देशों (बंगलादेश) से व्यापार के लिए बढ़ाकर अब 13 तथा भारत से व्यापार के लिए 19 मार्ग प्रदान किये हैं। चीन द्वारा एक सूती वस्त्र, ईंट का कारखाना, पोखरा घाटी में एक जल-विद्युत प्लाण्ट तथा सिंचाई योजना, नरनघाट गोरखा सड़क आदि निर्माण किया है। ईरान ने नेपाल को पूरा पेट्रोलियम देने का निश्चय किया है। नेपाल के सहायकों में भारत का सबसे बड़ा हाथ है। 1989 में यहाँ 974.2 करोड़ रूपये का आयात और 474.2 करोड़ रूपये का निर्यात हुआ था। यहाँ से निर्यात होने वाली वस्तुओं में चावल, पटसन्, लकड़ी, घी, तिलहन, आलू, खाल और जड़ी-बूटियां प्रमुख हैं। आयात सामग्री में वस्त्र, नमक, सीमेण्ट, लोहा-इस्पात, चाय, तम्बाकू, प्रसाधन सामग्री प्रमुख है। नेपाल विदेशी सामानों का आयात न केवल अपने लिए करता है अपितु इसकी बिक्री समीपवर्ती देशों में भी करता है। भारत में करोड़ों का विदेशी सामान नेपाल से आता है।[5]

विदेशी व्यापार

नेपाल का न तो अपना समुद्र तट है और न ही उसके रेलमार्ग अधिक विकसित है तथा नेपाली जनता की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण नेपाल का व्यापार अधिक उन्नत नहीं है। यह अधिकतर भारत और चीन से होता है। भारत को निर्यात किये जाने वाले सामान में इमारती लकड़ी, घी, चावल, तम्बाकू, कच्चा जूट, वनस्पति तेल, ऊन, चमड़ा, खालें और तिलहन हैं। आयात के अन्तर्गत सूती, ऊनी वस्त्र, नमक, औषधियाँ, मशीनें एवं यन्त्र, मोटरगाड़ियाँ, रेयान, पैट्रोलियम, शक्कर, सिगरेट, धातु की वस्तुएँ आदि मुख्य हैं।

नेपाल परम्परागत रूप से भारत पर बहुत आश्रित रहा है। अगस्त 1976 में दोनों के मध्य हुई विनिमय सन्धि समाप्त हो गयीं। मार्च 1978 में यह सन्धि पुनः हो गई तथा नेपाल को अन्य देशों से व्यापार करने के लिए स्वतन्त्र कर दिया गया। जून 1987 में दोनों देशों के बीच आर्थिक सहकारिता विकसित करने के लिए एक एग्रीमेण्ट पर हस्ताक्षर हुये। नेपाल का व्यापार अधिक उन्नत दशा में नहीं है क्योंकि इसकी स्थिति एवं परिवहन के साधनों का अभाव इसमें बाधक रहे हैं।

1985 में यहाँ 774 करोड़ नेपाली रूपये का आयात तथा 274 करोड़ नेपाली रूपये का निर्यात किया गया। नेपाल से निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ खाद्यान्न, जूट, इमारती लकड़ी, तिलहन, घी, आलू जड़ी-बूटियाँ, चमड़ा तथा खालें आदि हैं। आयातित वस्तुओं में प्रमुख वस्त्र, नमक, औषधियाँ, मशीनें व यंत्र, मोटर गाड़ियाँ, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, चीनी, कागज, जूते, सीमेण्ट, चाय लोहा एवं इस्पात आदि है। नेपाल का बड़ा व्यापारिक पार्टनर भारत है; जिसने 1986-87 में 44 प्रतिशत निर्यात किये तथा 40 प्रतिशत आयात सुलभ कराए।[6] नेपाल द्वारा विदेश व्यापार के रूप में सन् 1995 में 50,290 तथा निर्यात 15,550 (दस लाख नेपाली रूपये में) किया गया।

नेपाल में कृषि विकास, फलोत्पादन तथा अधिक उपज के लिए सिंचाई के साधनों का विकास किया जा रहा है। ताप्ती की घाटी में प्रमुख योजना का विकास किया गया है। भारत सरकार की सहायता से कोसी एवं राप्ती नदियों पर बाँध एवं जल-विद्युत योजनाएँ बनायी गयी हैं। ताप्ती नदी से नेपाल को काफी लाभ मिला है। इसके द्वारा दून क्षेत्र के लगभग 60,000 हेक्टेयर भूमि में सिंचाई होने लगी है। कोसी परियोजना में छत्तर नहर द्वारा नेपाल के पूर्वी भाग की सिंचाई की जाने लगी है। त्रिशूली योजना के तहत तीन शक्ति गृह बनाये गये हैं। घाघरा नदी पर करनाली परियोजना पर कार्य हो रहा है।

भारत सरकार सड़कों के सम्बन्ध में भी जाँच पड़ताल कर रही थी। टनकपुर बैराज से नेपाल के महेन्द्र नगर तक को जोड़ने वाले राजमार्ग और आरम्भ में नेपाल को प्रतिवर्ष एक करोड़ युनिट बिजली की मुफ्त आपूर्ति का आश्वासन देकर भारत ने अपनी सदाशयता का परिचय दिया। इसी तरह टनकपुर बैराज के समझौते के अनुसार जल देने तथा टनकपुर बैराज में एक बड़ा जलाशय बनाने का भी भारत ने आश्वासन दिया।

भारत एवं नेपाल द्वारा आपसी सहयोग से कृषि सम्बन्धी प्रस्ताव पर भी विचार किया गया जिसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान तथा नयी तकनीकी और बीजों पर शोध के नये ढंग तथा कृषि सम्बन्धी उद्योग में सहयोग की बात की गयी। इसके लिए एक संयुक्त कार्यदल बनाने की योजना को स्वीकृति दी गयी। जो इस प्रस्ताव को कार्यरूप देगा। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य नेपाल के ग्रामीण विकास और ग्रामीण व्यवसाय को उन्नत करना था।

इस प्रकार भारत - नेपाल सम्बन्ध के नये युग का आरंभ हुआ। दोनों देशों के सम्बन्धों को दृढ़ करने के उद्देश्य से जी.पी. कोइराला द्वारा दिसम्बर 1991 में ही काठमांडू यात्रा का निमंत्रण भारतीय प्रधानमंत्री को दिया था। इसी सम्बन्ध में भारतीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव 19 से 21 अक्टूबर 1992 में त्रिदिवसीय यात्रा पर काठमांडू गये। जहाँ उन्होने नेपाली प्रधानमंत्री

जी.पी. कोइराला से द्विपक्षीय मसलों पर व्यापक चर्चा की। राव की इस यात्रा से दोनों देशों के सम्बन्धों में और अधिक प्रगाढ़ता आयी है। भारतीय प्रधानमंत्री की इस यात्रा के दौरान भारत-नेपाल ने विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग बढ़ाने, भारत का उदार शर्तों पर नेपाल के निर्यात में वृद्धि करने और विपुल जल संसाधनों का दोनों देशों के साझे हित में प्रयोग करने पर सहमति व्यक्त की गयी।[7]

जल संसाधन

भारत नेपाल के मध्य जल संसाधन के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की आवश्यकता महसूस की गयी। इस सम्बन्ध से निर्णय लिये गये - जैसे करनाली, पंचेश्वर और सप्तकोशी जल विद्युत बहुद्देशीय परियोजना मध्यम श्रेणी की परियोजनाएं जैसे - बूढ़ी गंडक में बाढ़ आने के पूर्व सूचना तथा बाढ़ निवारण योजनाओं आदि पर भी सहमति हुई। भारत-नेपाल की संयुक्त विज्ञप्ति के अनुसार टनकपुर बैराज को लेकर चले आ रहे विवादों का समाधान खोजनें में दोनों पक्ष सफल रहे। इस बैराज से नेपाल की सम्प्रभुता के हनन का प्रयत्न जुड़ गया था।

इस बैराज का एक भाग नेपाली सीमा क्षेत्र को स्पर्श करता था। नेपाल सरकार द्वारा इस बांध के निर्माण की स्वीकृति को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गयी थी जिससे विवाद काफी उलझ गया था। लेकिन भारत द्वारा नेपाल को टनकपुर बिजलीघर से निःशुल्क दुगुनी बिजली उपलब्ध कराने के आश्वासन ने सभी विवादों का अन्त कर दिया है। वस्तुतः दोनों के मध्य नदियों पर व्यापक सहमति हो जाय तो इसका लाभ भारत को तो मिलेगा ही साथ ही साथ नेपाल भी विश्व के आर्थिक रूप से सुदृढ़ देशों में आ सकेगा। यदि नेपाल की हिमालयी क्षेत्र से भारत में उतरने वाली नदियों की धारा में अन्तर्निहित उर्जा के प्रयोग की तकनीक विकसित हो जाय तो नेपाल में वर्तमान 239 मेगावाट बिजली के स्थान पर 83 हजार मेगावाट बिजली प्रतिवर्ष उत्पादित होगी एवं बाढ़ से होने वाली तबाही से भी बच सकते हैं क्योंकि अनियंत्रित नदियाँ उत्तरी बिहार की मैदानी इलाकों में तबाही फैलाती है।[8]

गंगा नदी बेसिन में नेपाल की भूमि का 90 प्रतिशत (14.75 मि.हे.) तथा भारत की भूमि का 26 प्रतिशत (328.76 मि.हे.) पड़ता है गंगा बेसिन का क्षेत्रफल 108 मि.हे. है,जिसमें भारत और नेपाल का लगभग 80 प्रतिशत एवं 13 प्रतिशत भाग है, इसके साथ इस बेसिन में बंगलादेश व तिब्बत की भूमि का 4 प्रतिशत व 3 प्रतिशत क्षेत्रफल पड़ता है।

इन सभी आंकड़ों पर ध्यान दिया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि सात प्रमुख नदियाँ महानन्दा, कोसी, कमला बलन, बागमती, बूढ़ी गंडक, गंडक और घाघरा पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर गंगा नदी में मिलती है उपरोक्त तथ्यों से यही निष्कर्ष निकलता है कि दोनों देशों के मध्य नदी जल संधि परस्पर भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। किसी विशेष जल संसाधन सम्बन्धी परियोजना जैसे मुद्दे पर आपसी सहमति से अधिकतम लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

दिसम्बर, 1991 में नेपाली प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोईराला की भारत यात्रा में अनेक महत्वपूर्ण समझौते हुए। जल स्रोतों के दोहन से संबंधित टनकपुर बांध का महत्वपूर्ण समझौता हुआ जिसमें भारतीय बाँध के बायें निकास स्रोत को नेपाली सीमा में 577 मीटर अंदर तक 2.9 हेक्टेयर भूमि में विस्तारित करने की व्यवस्था थी।[9] इसके बदले में भारत द्वारा नेपाल को 5000 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई के लिए जल और 10 मिलियन यूनिट विद्युत निःशुल्क देने की व्यवस्था की गई। 1992 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने अपनी नेपाल यात्रा में निःशुल्क बिजली की मात्रा को बढ़ाकर 20 मिलियन विद्युत (यूनिट) कर दिया।

औद्योगिक विकास में अवरोध

नेपाल का औद्योगिक विकास पूरी तरह नहीं हो पाया है, क्योंकि :-

1. जिन खनिज पदार्थों पर उद्योग निर्भर करते हैं, उनका यहाँ प्रायः आभाव है।

2. यहाँ कृषि वस्तुओं की अतिरिक्तता नहीं है।

3. अधिकांश श्रमिक अनपढ़, अकुशल, और यंत्रों से अनभिज्ञ हैं।

4. अधिकांश जनता गरीब है, अतः वस्तुओं की मांग अधिक नहीं है।

5. परिवहन के मार्गों का नितान्त आभाव है।

6. राजशाही एवं लोकशाही के द्वन्द्व के चलते नेपाल में सरकार की अस्थिरता और आंतरिक वाह्य राजनीतिक परिस्थितियाँ विदेशी मुद्रा को आकर्षित करने में अक्षम हैं।[10]

किन्तु भविष्य में औद्योगिक विकास की पर्याप्त सम्भावनाएँ यहाँ मिलती हैं। नदियों में जल की पर्याप्त मात्रा और वन साधनों की अधिकता के कारण अनेक उद्योगों का विकास सम्भव है। विद्युत शक्ति के सहारे नत्रजन, उर्वरक, कैल्शियम, कार्बाइड और एल्यूमीनियम संयन्त्र स्थापित किये जा सकते हैं। वन प्रदेशों पर आधारित लकड़ी चीरने, प्लाईवुड का फर्नीचर बनाने, कागज, लुग्दी, रेयान, लकड़ी से रसायन प्राप्त करने, कोयला, तारपीन तथा कत्था आदि प्राप्त करने के कारखाने स्थापित किये जा सकते हैं।

नेपाल के स्वल्प विकास का कारण

एशियाई देशों में नेपाल सबसे कम विकसित देश एवं दक्षिणी एशिया का एकमात्र प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र है। आन्तरिक क्षेत्रों में आज भी यातायात का साधन पशु ही है अथवा पैदल कुली या शेरपा माल ढोने का काम करते हैं। इस देश में विद्युत उत्पादन की विशाल सम्भावनाएँ हैं फिर भी देश की 50 से 60 प्रतिशत बस्तियाँ आज भी बिना बिजली की सुविधा के अन्धकार में है। न्यूनतम शिक्षा की भी सुविधा भीतरी गाँवों में उपलब्ध नहीं है। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ, भारत, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका व पश्चिमी यूरोप से समय - समय पर आन्तरिक क्षेत्रों में सामाजिक व

आर्थिक क्रियाओं के विकास हेतु अनुदान मिलता है, जिन्हें उपयुक्त चयनित दरबारियों के माध्यम से खर्च होना होता है सो अधिकांश पैसा इन्हीं के हितार्थ खर्च हो जाता है।

सामान्य जन-मानस का विकास करने व उन्हें राष्ट्रहित में जागरूक कराने वाले 'कोईराला, जैसे नेताओं का अभी सर्वथा अभाव है। इस प्रकार सभी ओर से राजतन्त्र, लोकतंत्र एवं नौकरशाही विकास के प्रति उदासीन है एवं यहाँ अनपढ़ भोली व निरक्षर जनता के लिए राजा ही ईश्वर है अतः अपने हितों के लिए वह कभी भी मुँह नहीं खोल पाते । इसीलिए आज भी अधिकांश नेपाल की सांस्कृतिक दृश्यभूमि वहीं है जैसी कि 65 वर्ष पूर्व थी, अथवा जैसा उसके राजा ने उसे बनाना चाहा।

अतः आने वाले निकट भविष्य में भी यहाँ परिवर्तन की सम्भावना दिखायी नहीं देती ।[11] वर्तमान परिस्थितियों में नेपाल के लिये यह अत्यंत आवश्यक है कि वह अपने संसाधनो का दोहन अपने विकास में करे जिसके द्वारा नेपाल की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी विशेषकर जल संसाधनो को नियोजित करे, इस कार्य में भारत द्वारा नेपाल को पर्याप्त सहायता देना उचित है। यह सहायता तकनीक एवं आर्थिक रूप से की जा सकती है, इसके प्रत्युत्तर में नेपाल भारत को कम मुल्य पर बिजली उपलब्ध कराये साथ ही साथ भारत के सीमावर्ती राज्यों विशेषकर बिहार राज्य में आने वाले बाढ़ एवं इससे होने वाले फसलों के नुकसान से बचा जा सकता है। नेपाल अपने संसाधनो का उचित प्रबन्ध करके, पर्यटन को सुगम एवं सुरक्षित बनाकर, उत्पादन बढ़ाकर, औद्योगिकरण करके अपने आर्थिक विकास के साथ-साथ अपने जनता के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में सफल हो सकता है, इस प्रकार दोनों राष्ट्र सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ़ कर सकते है।

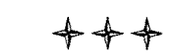

REFERENCES

1. Dr. K.P. Singh, "Nepal evam Bharatiya Suraksha", Raksharth 4/5, No. 1 June 2003 P.P. 81-87.
2. Dr. M.S. Sisodiya, "Pradeshik evam Bharat ka Bhugoal" PP. 232-237.
3. Dr. B.P. Rao, "Bharat evam Padosi Desh", Pub. 1995, P. 393.
4. Mamoria & Sharma, "Sansadhan evam Paryavaran" P. 1.
5. Dr. B.P. Rao, Ibid..... PP. 393 - 400.
6. Dr. M.S. Sisodiya Ibid.....
7. "Economic & Political Weekly" Vol. 29,9th April, 1994,PP. 850-52.
8. The Telegraph (Calcutta) 23 Oct., 1992. & S.D. Muni "Nepal How Vital in India's Role", Himalaya Today, Sept., 1992 - Feb., 1993 PP. 63.
9. P.D. Kaoshik "Foreign Policy of India - 2001", P. 152.
10. "Vishva Bhugoal : Pradeshik Praroop", Pub., 1990 PP. 457-460.
11. Ibid.....

--x--